International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.121-125

छायावादी युग में सामाजिक यथार्थवादी चेतना

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव*

सार

प्रथम विश्व युद्ध ने हमें पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में ला दिया और हम नई संस्कृति और सोच की ओर अग्रसर हो गये। साहित्य में पश्चिमी सभ्यता की नकल ही साहित्य में नया बदलाव लाई और हमारा साहित्य उससे प्रभावित हुआ। बीसवीं शताब्दी स्वतंत्रता और नवीनता का युग रहा है, नए नए विचारों ने बड़े परिवर्तन किए। विज्ञान के इस नए युग में लोग देश जाति के प्राण स्वरूप साहित्य में उदासीन रहें, भला यह कैसे संभव है? इसी बदलाव के भीतर छायावाद को भी अवस्थित करते हुये एक कालखंड की स्थापना की। यही कालखंड छायावाद के नाम से जाना गया।यही वह समय था जब भारत के रंगमंच पर गांधी के रूप में एक महान व्यक्तित्व अवतरित हुआ जिसने देश में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। साहित्य समाज का दर्पण है अतः तत्कालीन समाज की चेतना का वहाँ के साहित्य में होना स्वाभाविक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दो महायुद्ध की स्वच्छन्दतावादी कविता को ही छायावादी कविता माना गया। छायावादी कविता केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया ही नही बल्कि जीवन और जगत के प्रति एक निश्चित एवं मूलभूत दृष्टिकोण भी है।

शब्दकोश: *स्वच्छन्दतावाद, मूलभूत, समुन्नत, ज्वलंत, चिरदोलित, वैचित्र्य, मोहपाश।*

प्रस्तावना

साहित्य किसी भी युग का हो यदि वह जीवित है तो अपने युग की सामाजिक चेतना व यथार्थ से अछूता नहीं रह सकता। छायावादी काव्य में भी सामाजिक यथार्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। समस्त छायावादी युग भारत के लिए अस्मिता की खोज का युग है। सदियो की दासता के कारण भारतीय जनता रूढ़िग्रस्त हो गयी थी,देश की शिक्षा नीति ने व्यक्तिवादी भावना को प्रोत्साहन दिया,जिससे व्यक्ति का अहम उद्दीप्त हो उठा और चारों ओर विदेशी दासता के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देने लगा। परिणामस्वरूप समाज का यथार्थ साहित्य में उभरकर सामने आया।

सामाजिक यथार्थ के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद ने कहा है कि जब तक समाज के उपकार के लिए कवि की लेखनी ने कार्य न किया हो तब तक केवल उसकी उपमा और शब्द– वैचित्र्य तथा अलंकारों पर भूलकर हम ऐसे कवि के आसन पर नहीं बिठा सकते जिसने कि अपनी लेखनी से समाज की प्रत्येक कृतियों को स्पंदित करके उसमें जीवन डालने का उद्योग न किया हो। लगभग सभी छायावादी कवियों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक दृष्टि देखने को मिलती है, तभी तो महाकवि पंत सामाजिक मोहपाश में बद्ध होकर कह उठते हैं।

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, बिजोलिया, राजस्थान।

सुंदर है विहग सुमन सुंदर,
मानव तू सबसे सुंदरतम ।
निर्मित सबकी तिल सुषमा से,
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम।।

सामाजिक संस्कारों के परिवर्तन के संदर्भ में छायावादी कवियों ने नारी की स्वतंत्रता पर भी विशेष बल दिया है। उनका मानना था कि यदि समाज का आधा अंग विकृत रहेगा तो समाज की उन्नति संभव नहीं है अतः नारी को स्वतंत्र रखने पर बल दिया .

योनि नहीं रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित
उसे पूर्ण स्वाधीन करो,वह रहे न नर पर अवसित ।
द्वद्व क्षुधित मानव समाज पशु जग से भी है गर्हित ।
नर–नारी के सहज स्नेह से सूक्ष्मवृत्ति हो विकसित ।

नाथूराम शर्मा ने अपनी संस्कृति का त्याग करने वालों पर करारा व्यंग्य किया है–

देश–देश भाषा तजी कुल की चाल बिसार,
मौजी मिस्टर हो गए,धर विलायती धार ।

छायावाद के प्रवर्तक और काव्य,नाटक,कहानी,उपन्यास जैसी विधाओं पर समान रूप से अपनी लेखनी का लोहा मनवाने वाले कविवर जयशंकर प्रसाद ने कहा है .

जीवन की जटिल समस्या है,
बढ़ी जटा सी कैसी ।
उमड़ी है धूल हृदय में,
किसकी विभूति है ऐसी ।

समाज की विषम समस्या से छायावादी कवि का हृदय हाहाकार करने लगता है,तभी तो पंत ष्ताजष् जैसी कविता लिखने में सक्षम हो पाते हैं। उनकी लगभग सभी कविताओं में समाज के प्रति जागरूकता दिखाई देती है। परिवर्तन कविता में उन्होंने द्वेष के अतीत को याद करते हुये आँसू बहाये हैं।

निराला के काव्य में भी समाजिक यथार्थ उभरकर सामने आया है । वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को बखूबी निभाते हैं तथा समाज मे प्रचलित रूढ़ियों की भर्त्सना भी जमकर करते हैं। वे सम्पूर्ण संसार के कल्याण की कामना करते हैं.

जग को ज्योतिर्मय कर दो,
प्रिय कोमल पदगामिनी मंद उतर ।
जीवन–मृत तरु–तृन गुल्मो की पृथ्वी पर,
हँस–हँस निज पथ आलोकित कर,
नूतन जीवन भर दो ।

महादेवी के काव्य में भी सामाजिक चेतना का स्वर सुनाई देता है। संसार का क्रंदन उनके व्यक्तिगत जीवन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, तभी तो वे कह उठती हैं–

मेरे हंसते अधर नही
जग की आँसू लडियां देखो ।

पंत ने भी स्त्रियों की विषम अवस्था के लिये पुरुषों को ही दोषी माना है। नारी स्वातंर्त्य की बात करते हुये वे कहते हैं–

मुक्त करो नारी को मानव,
युग वंदिनी नारी को ।
युग की निर्मम कर से,
जननी, सखी, प्यारी को ।

प्रसाद ने तो अपने अमर काव्य कामायनी में समाज की अति सुंदर कल्पना की है और उसका सारा श्रेय नारी को ही दिया है वे कहते हैं .

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में ।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में ।।

आर्य समाज और गांधीजी के प्रयासों के परिणामस्वरूप छायावाद मेंअछूतों में भी अभूतपूर्व जागरण हुआ। हिन्दू जाति की एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए कवियों ने अपनी लेखनी चलाई। पंत ने जाति– पाँति की कड़ियों को तोड़ने की बात कही है–

जाति– पाँति की कड़ियाँ टूटे,
मोह द्रोह –मद मत्सर छूटे।
जीवन के नव निर्झर फूटें,
वैभव बने पराभव,
युग प्रभात हो अभिनव ।
जाति– पाँति की कड़ियाँ टूटे,
मोह द्रोह –मद मत्सर छूटे।
जीवन के नव निर्झर फूटें,
वैभव बने पराभव,
युग प्रभात हो अभिनव ।

सामाजिक यथार्थ से अनुप्राणित साहित्य ही समाज को नई दिशा दे सकता है। साहित्यकार लोभ,मोह,हर्ष,अमर्ष आदि के प्रति अनासक्त रहकर युगीन परिस्थितियों को आत्मसात करता हुआ लोकहित के प्रति जागरुक रहता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में इस युग का कवि हृदय हो या बुद्धिवादी स्वप्नदृष्टा हो या यथार्थ का चित्रकार उसकी केवल व्यक्तिगत हार–जीत महत्व नहीं रखती क्योंकि उसके सारे व्यक्तिगत सत्य की आज समष्टिगत परीक्षा है,उसे स्वप्नदृष्टा भी होना है और जीवन के निम्न स्तर तक मानसिक खादय को भी पहुँचाना है,तृषित मानवता को संवेदना का जल भी देना है।

आधुनिक काल की मीरा महादेवी का काव्य भी सामाजिक चेतना से अनुप्राणित है। उनका भावुक मन समाज मे व्याप्त विडंबनाओं को देख करुणा से द्रवीभूत हो जाता है। युगीन वैषम्य से उनका हृदय वेदना से फूट पड़ता है–

कह दे माँ अब क्या देखूं,
देखूं खिलती कलियों को,
या प्यासे सूखे अधरों को ।

समाज की विषम परिस्थितियों से द्रवित होकर छायावादी कवि का मन चीत्कार उठता है कवि पंत के शब्दों में–

हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन

साथ ही उन्होंने अपनी गीत कविता में नई मानव सभ्यता व मानवतावादी दृटिकोण उकेरा है–

मै नव मानवता का संदेश सुनता,
जीवन में के भेदों में सोई मति को,
मै आत्म एकता में अनिमेष जागता।
पंगु बहिर्मुख जग में बिखरे मन को,
अंतर सोपानों पर उर्ध्व चढ़ाता।।

युगों–युगों से शोषित भारतीयों को शक्तिशाली,साधन–संपन्न,ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के साथ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना आसान काम नहीं था,लेकिन हमारे छायावादी कवियों ने ये दुरूह कार्य किया। उन्होंने जन मानस में जागरण ओर संघर्ष का संचार करने के लिए अपनी पूरी सर्जन शक्ति लगा दी। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपनी इन पंक्तियों में चिरदोहित एवम भिखमंगे भारत को जगाने का प्रयास किया है–

ओ भिखमंगे, ओ पराजित, ओ मल्लूस, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का,जग अरे निद्रा सम्मोहित।
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जलथल भर दे,
अंगारो के अम्बरों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।।

कविवर पंत ने ग्रामीण समाज से जुड़कर जो कविताये लिखी हैं उनमे भी सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। कवि लोक समस्याओं को सुलझाना चाहता है–

आओ लोक समस्याओं पर,
मिलकर करें विवेचन।

इतना ही नही महाकवि निराला ने तो भारतीय समाज की सर्वाधिक उपेक्षित विधवा नारी को भी सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित किया है–

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी,
वह दीपशिखा सी शांत भाव में लीन।
वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा सी,
वह टूटे तरु की छुटी लाता सी दीन,
वह दलित भारत की ही विधवा है।।

इतना ही नही उन्होंने समाज की दयनीय दशा का चित्र भी बड़ी सफाई से अपनी कविता में उपस्थित किया है।उनकी कविता भिक्षुक व तोड़ती पत्थर में समाज का यथार्थ उभकर सामने आता है–

वह आता

दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता,
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि छायावादी काव्य में जहाँ एक ओर सामाजिक यथार्थ के दर्शन होते हैं वही दूसरी ओर विषम परिस्थितियों को परिवर्तित करते हुये नवनिर्माण की भावना भी विद्यमान है।

हिंदी में छायावाद भक्ति साहित्य के बाद सृजनात्मकता की दृष्टि से उर्वर साहित्य रहा है। नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक ष्आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ ष के छायावाद शीर्षक में इस काल की सीमा तय करते हुए पंत के दो काव्य संग्रहों के प्रकाशन वर्ष का उल्लेख किया है। उस समय असहयोग आंदोलन अपनी लाख कमजोरियों के बावजूद जनता के स्वाधीनता आंदोलन में हिस्सा ले रहा था।इस व्यापक जन भागीदारी ने साहित्यकारों पर गहरा प्रभाव डाला। छायावादी कविता में समाज के प्रति गहन दृष्टि उभरी। प्रसाद ने प्रयाण गीत लिखे तो निराला ने आध्यात्मिक रंग लिए हुए गीत लिखे,जबकि महादेवी वर्मा ने ओजपूर्ण गीत लिखकर उस युग में एक नया आंदोलन उपस्थित किया। इन कवियों के अतिरिक्त प्रेमचंद के लेखन में सामाजिक यथार्थ पाठकों के लिए अनजाना नहीं है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सिलसिले में भी इस बात के पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि उनका लेखन और चिंतन सामाजिक वातावरण से प्रभावित रहा है। उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के साहित्य का विवेचन करते हुये सामाजिक यथार्थ को उभारा है। ष्असहयोग आंदोलन और अव्यापारिक श्रेणियाँष्शीर्षक से लिखा गया उनका एक लेख भी उनकी सामाजिक चेतना का प्रमाण है। 1929 के आते–आते दिखाई देने लगा था कि छायावाद में आगे विकास नहीं हो पा रहा है। विशाल भारत के दिसंबर 1929 में श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा का लेख छायावाद छपा, उसमें उन्होंने छायावाद के भीतर पैदा हो रहे रीतिवाद की चर्चा की और कहा कि जैसे ब्रजभाषा की कविता को विपंची, ह्रततंत्री,झंझावात आदि से छुटकारा दिलाने की जरूरत है। इसी लेख में उन्होंने एक और आरोप लगाया जो छायावादी कविता के सामाजिक आधार पर अत्यंत विचारणीय है। उनके मुताबिक कविता का जीवन इस्तमरारी बंदोबस्त में मौज करने वाले पढ़े लिखे जमींदारों का जीवन है।

छायावादी लेखकों ने कविता की सीमाओं को समझकर अपने लेखन में नवीन मार्ग अपनाया। निराला ने नए पत्ते काव्य संग्रह में जमीन तोड़ी ,कुल्ली भाट और बिल्लेसुर बकरिहा जैसे यथार्थवादी उपन्यास लिखे। प्रसाद का कंकाल भी इसी नई सामाजिक यथार्थवादी चेतना का परिचायक है। उनके नाटक भी सामाजिक चेतना से ओतप्रोत हैं ओर उनकी कहानियों में भी मनुष्य के भाग्य के उत्थान–पतन को इतने ज्यादा सामाजिक तत्वों के साथ गूंथा गया है कि वे दार्शनिक रूप में नजर आने लगे हैं। ममता कहानी में वे इस्लाम के सवाल पर अपने समय से बहुत आगे नजर आते हैं। इसके बाद निराला ने अपनी लंबी कविता ष्सरोज स्मृतिष में अपनी पुत्री का जो सौंदर्य वर्णन किया है वह कविता की दुनिया मे दुर्लभ है। निराला ने निजी व्यथा को सामाजिक संघर्ष के साथ गूंथ दिया है। छायावाद का समय भारत की आजादी की लड़ाई में व्यापक जनता की भागीदारी का समय था साथ ही हिंदी क्षेत्र में शहरी मध्यवर्ग का विकास हो रहा था। इस नवोदित वर्ग का रिश्ता अभी देहाती जड़ो से टूटा नहीं था। अधिकांश लेखक इस वर्ग का हिस्सा थे। सामाजिक बदलाव की आकांक्षा और समाज के सामंती यथार्थ के बीच की टकराहट छायावाद की शक्ति और सीमा दोनों को रूपायित करती है। इस तरह छायावाद में समाज के प्रति गहरी संवेदना एवं लोकहित की भावना मोतियों कीलड़ियों की भाँति गुंथी है। छायावादी कवियों की करुणा व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत है। इसलिए इस काल को केवल कल्पना और भावना में विचरण करने वाला काव्य न मानकर सामाजिक यथार्थवादी चेतना का काव्य मानना अधिक समीचीन होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य रामचंद्र शुक्लः हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. नामवर सिंहः आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. नामवर सिंहः छायावाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
4. शांतिप्रिय द्विवेदीः हमारे साहित्य मुकुटधर पांडेयः निर्माता, बांकीपुर ।
5. नंद दुलारे बाजपेयीः हिंदी साहित्य रू बीसवीं शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
6. रामविलास शर्माः निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
7. मुकुटधर पांडेयः हिंदी में छायावाद, तिरुपति प्रकाशन,हापुड़ ।
8. गोपाल प्रधानः छायावाद युगीन सहित्यवाद विवाद, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

❖◆❖